# साहित्य समाज और महिला सशक्तिकरण

डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे

Scanned by CamScanner

# साहित्य समाज और महिला सशक्तिकरण

डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे

मंगलम पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
दिल्ली-110053 (भारत)

Scanned by CamScanner

प्रकाशकः
मंगलम पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
के-129 3½ पुस्ता मेनरोड, नीयर ग्रीन वेल्स स्कूल,
गौतम विहार, दिल्ली-110053
फोनः 011-22945677, मो. 9868572512, 9968367559
**Email: manglam.books2007@rediffmail.com**
**manglam.publishers@ rediffmail.com**

साहित्य समाज और महिला सशक्तिकरण

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

प्रथम संस्करण 2015
ISBN 978-93-82816-25-6
**₹ 795/-**

* इस पुस्तक का कोई अंश फोटो कापी सूचना संग्रह साधनों के माध्यम से उपयोग करने के पूर्व लेखक एवं प्रकाशक की लिखित सूचना अनिवार्य है।
* परिवाद यदि हो तो न्यायायिक क्षेत्र विलाशपुर (छ.ग.) ही होगा।
* पुस्तक में दी गई जानकारी प्राथमिक एवं द्वितीय स्त्रोत के आधार पर लेखक द्वारा रचित है। जिसमें टंकड़ सम्बन्धी मानव भूल स्वाभाविक है। ध्यान दिलाने पर आगामी संस्करण में सुधार संभव है।
* किसी प्रकार के रचनात्मक सुझाव का स्वागत है।

भारत में मुद्रितः

रविन्द्र कुमार यादव द्वारा मंगलम पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली-53 के लिए प्रकाशित एवं शहाबउद्दीन कम्प्यूटर, दिल्ली-द्वारा शब्द संयोजन तथा सचिन प्रिंटर्स, मौजपुर, दिल्ली-53 में मुद्रित।

Scanned by CamScanner

# अनुक्रमणिका


1. महिला सशक्तिकरण की अवधारणा : आवश्यकता और स्वरूप
   – डॉ. अनुसूया अग्रवाल (पृष्ठ क्र. 1–4)
2. महिला सशक्तिकरण : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं भावी दिशाएं
   – डॉ. एस.एल. सोनवाने (पृष्ठ क्र. 5–12)
3. धार्मिक ग्रंथ और स्त्री अस्मिता : सतयुग से साईबर युग तक
   – डॉ. स्वामीराम बंजारे 'सरल' (पृष्ठ क्र. 13–20)
4. हिन्दी कविता में 'स्त्री लेखन और स्त्री अस्मिता'
   – डॉ. गोपीराम शर्मा (पृष्ठ क्र. 21–25)
5. हिन्दी कविता में नारी समाज –
   – प्रो. राजकुमार लहरे (पृष्ठ क्र. 26–32)
6. समकालीन कविता और स्त्री अस्मिता : स्त्री मुक्ति का विराट स्वप्न
   – डॉ. रामकिंकर पाण्डेय (पृष्ठ क्र. 33–41)
7. साहित्य में स्त्री विमर्श – डॉ. बी.आर. महिपाल (पृष्ठ क्र. 42–44)
8. पवन करण की कविता में स्त्री मन के भीतर के सौंदर्य की तलाश
   – डॉ. संजय राठौड़ (पृष्ठ क्र. 45–49)
9. नयी सदी का कथा साहित्य : स्त्री विमर्श बनाम यौन विमर्श
   – डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे (पृष्ठ क्र. 50–62)
10. उदय प्रकाश की कहानियों में चित्रित नारी चेतना तथा संघर्ष
    – प्रा. विजय लक्ष्मण साठे (पृष्ठ क्र. 63–69)
11. साहित्य और समाज में महिला : मेहरून्निसा परवेज के कथा सहित्य के संदर्भ में – डॉ. रमेश टण्डन (पृष्ठ क्र. 70–71)
12. वैश्वीकरण के दौर में नारी चेतना – डॉ. आर.पी.टण्डन(पृष्ठ क्र. 72–75)
13. भारती समाज में महिला – प्रो. भुवन सिंह राज, प्रो. नवीन कुमार रेलवानी, – कु. प्रीति साहू (पृष्ठ क्र. 76–83)
14. महिला शिक्षा एवं अधिकारों के सजग प्रहरी
    – डॉ. एम.एल. पाटले (पृष्ठ क्र. 84–89)
15. नारी चेतना और निर्व्यक्तीकरण : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
    – प्रो. जी.सी. भारद्वाज (पृष्ठ क्र. 90–93)
16. समाज की मुस्कान नार – डॉ. राजाराम बनर्जी (पृष्ठ क्र. 94–100)
17. साहित्य समाज और महिला सशक्तिकरण : चुनौती एवं संभावनाएं
    – डॉ. आर.बी. सोनवानी, प्रो. सुश्री मथुरा महिलांगे (पृष्ठ क्र. 101–104)
18. पंचायती राज व्यवस्था और महिला सशक्तिकरण


Scanned by CamScanner

– श्रीमती उमानंदिनी जायसवाल, श्री शैलेष कुमार मिश्रा (पृष्ठ क्र. 105–113)
19. पंचायती राज व्यवस्था और महिला सशक्तिकरण : चुनौतियां व विकल्प
– डॉ. अरविन्द्र कुमार जांगड़े (पृष्ठ क्र. 114–119)
20. राजनीति में महिला आरक्षण का लोकतंत्र पर प्रभाव
– डॉ. एल.एल. निराला, श्री विनोद कुमार साहू (पृष्ठ क्र. 120–126)
21. स्व–सहायता समूह एवं महिला सशक्तिकरण
– डॉ. कल्याणी जैन (पृष्ठ क्र. 127–133)
22. महिला सशक्तिकरण : संवैधानिक प्रावधान व सुरक्षा उपाय – एक अध्ययन – प्रो. टी.एल. मिर्झा, डॉ. बी.के.डहरिया (पृष्ठ क्र. 134–141)
23. महिला सशक्तिकरण की नीतियां
– डॉ.(श्रीमती) मंजूलता कश्यप, डॉ. श्याम कुमार मधुकर (पृष्ठ क्र. 142–154)
24. महिला सशक्तिकरण हेतु केन्द्र सरकार के आर्थिक प्रयास –
– डॉ. देवेन्द्र शुक्ल (पृष्ठ क्र. 155–161)
25. नारी जाति के प्रथम उद्धारक – गुरू घासीदास
– डॉ. हेमन्त पाल घृतलहर (पृष्ठ क्र. 162–175)
26. महिला उत्थान में डॉ. अम्बेडकर की भूमिका : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण
– डॉ. के.पी.कुर्रे (पृष्ठ क्र. 176–182)
27. Women empowerment
- Dr.(Smt.) Sanju Pandey, Prof. Chandrakala Patel. (पृष्ठ क्र. 183–187)
28. Women empowerment : Propositions of Indian women writers
- Shailesh Kumar Mishra, Bhupendra Kumar Patel.(पृष्ठ क्र. 188–201)

Scanned by CamScanner

25

# नारी जाति के प्रथम उद्धारक – गुरू घासीदास

**डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे**
विभागाध्यक्ष–हिन्दी
शासकीय महाविद्यालय, हसौद
जिला – जांजगीर–चांपा (छ.ग.)

"जितने आत्मविश्वास से
धरती पर पाँव रखते हो तुम
उतने ही आत्मविश्वास से
धरती पर चल नहीं पाती हूँ मैं
जिस आत्म विश्वास से चलते हो तुम गर्वोन्नत
उसी आत्मविश्वास से
क्यों नहीं सिर उठा पाती हूँ मैं?
तुम करके अनगितन अपराध
जी लेते हो एक सम्मानित जीवन
और तरेरते हो आँखें
सच के सूरज को
पर बिना किये कोई अपराध
एक अपराध–बोध में जीती हूँ मैं।"(1)

आखिर क्यों? ये कैसी विषम व्यवस्था है? इस व्यवस्था पर आज की नारी 'नारी–विमर्श' के द्वारा अपनी आवाज बुलंद कर रही है। आज उसकी आँखें खुल गई हैं और वह जागरूक दृष्टि से सर्वत्र दृष्टिपात करती नजर आती है। कल तक तो उसे अहसास भी नही था। आज भारतीय संविधान और उसमें बाबा साहेब डॉ.

Scanned by CamScanner

भीमराव अम्बेडकर द्वारा किये गये प्रावधान नारी को समान अधिकार एवं अवसर प्रदान कर रहे हैं। संविधान के संरक्षण में ही आज नारी चल फिर पा रही है, अपने हक, अधिकार, सम्मान की बात कह पा रही है। उसकी चिंतन और अभिव्यक्ति का सारा श्रेय भारतीय संविधान और इसके शिल्पकार डॉ. अम्बेडकर को जाता है। कल तक तो उसका शोषण ही होता था और उसे इतनी भी आजादी न थी कि पीड़ा से कराह भी सके। लेकिन आज वह सजग, सचेत और विवेकशील हो गई है। उसे मालूम है पुरूषवादी नजरिये और पितृसत्तात्मक पुरूष प्रधान समाज तंत्र की स्थिति और षडयंत्र क्या है –

"अरे हाँ .....
अपनी जिन्दगी को मैंने जिया कब?
घर में पुरूष अहंकार–
एक गाल पर थप्पड़
मारता है, तो
गली में वर्ण–आधिपत्य
दूसरे गाल पर चोट करता है।" (2)

स्त्री आज पढ़ लिखकर जागृत हो रही है। यह उसके जागरूक चेतना की ही अभिव्यक्ति है। तभी तो उसे तथ्य, सत्य और कथ्य का बोध हो रहा है। कथ्य में तो वह शक्ति की देवी, धन की देवी, ज्ञान की देवी और न जाने क्या–क्या है, तथय में वह एक उपभोग की वस्तु सदृश है जिसका हर जगह, हर दृष्टि से उपयोग भर किया जा रहा है और सत्य में स्त्री का जीवन विषम, दुष्कर, यातना, पक्षपात भरा और अत्यंत दुःख से भरा है। तभी तो महादेवी वर्मा कहती है –

"मैं नीर भरी दुःख की बदली .....
विस्तृत नभ का कोई कोंना
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी, मिट आज चली।।"(3)

इस दुःख से भरे व्यक्तित्व की नियति है कि आज है, कल नहीं है .... कुछ भी स्थायी नही है। सचमुच स्त्री जीवन आकाश में आते जाते मेघ खण्डों सा क्षणभंगुर प्रतीत होता है। पर ये भी क्या कम है कि कल तक जो विवशता और लाचारी में कुंठित, लुंठित, संकुचित, मूक पशुवत मौन अबला थी आज वह बोधपूर्ण हो गई है पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है और कहीं कहीं तो पुरूष से एक कदम आगे हो चुकी है।

पर यह सब इतना आसान नहीं था। यदि हम इतिहास पर दृष्टिपात करें

Scanned by CamScanner

तो पता चलता है कि पुरूषवादी सत्ता ने स्त्री के उपभोग को लक्ष्य कर उसे बेड़ियों और जंजीरों में कैद कर रखा था, ये बेड़ियाँ धर्म, समाज, प्रथा, परंपरा, रीति, नीति, दर्शन, साहित्य एवं राजनीति सभी क्षेत्रों में थी। कुल मकसद था स्त्री को भोगो और भोगकर वस्तु की भांति फेंक दो। आज की भाषा में इसे 'यूज एण्ड थ्रो' कहेंगे। यह 'कल्चर' इस देश में हजारों वर्षों तक रहा है। इससे इस देश की मानसिकता ऐसी ही बन गई है। तभी तो निर्भया, दामिनी और न जाने क्या–क्या कांड आज भी बदस्तूर जारी है। ये कांड तो गिने चुने उदाहरण हैं । बल्कि मैं तो यह कहना चाहता हूं कि इस देश का ऐसा कौन सा शहर, नगर, गांव, गली, मुहल्ला, आफिस या घर है जहां प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से स्त्री के साथ कभी अन्याय नहीं होता, उसे मैं देखना चाहूंगा । संवैधानिक प्रावधानों एवं विशेष कानूनी अधिकारों के बावजूद स्त्री के प्रति पुरूषवादी नजरिया आज भी नकारात्मक, आक्रामक, शोषक और शासक है । जब आज ऐसी स्थिति है तो जरा पहले की कल्पना करिये ।.... उसके चिंतन मात्र से रोम–रोम सिहर उठते हैं ।

हजारों वर्षो की जिल्लत और जहन्नुम की यातनाएं भोग चुकी स्त्री कराह रही थी, मुगल, मराठा, पेशवा और अंग्रेजों का अत्याचार बढ़ गया था, पिण्डारियों की लूट चरम पर थी, धर्म के ठेकेदार केवल रण्डीबाज बनकर रह गये थे, पाप–पुण्य, जाति–पाँति के नाम पर स्त्री मात्र का शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक एवं यौन शोषण चरम पर था ऐसे समय में 18 दिसम्बर सन् 1756 ई. में मध्यभारत, छत्तीसगढ़ क्षेत्र रायपुर जिलांतर्गत बलौदाबाजार तहसील के छोटे से गांव गिरौद (अब गिरौदपुरी) में माता अमरौतिन की कोख से, पिता मंहगूदास की गोद में एक सुन्दर सा बालक जन्म लेकर आया, जिसका नाम घासीदास रखा गया । "गुरू घासीदास का अवतरण असत्य के साथ सत्य, अन्याय के साथ न्याय, पशुता के साथ मानवता एवं हिंसा के साथ अहिंसा के संघर्ष की कहानी है ।"(4) इस संघर्ष से जन्मा एक महान उद्धारक–गुरू घासीदास ।

उस समय छत्तीसगढ़ की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक स्थिति अस्त व्यस्त थी, शैव, वैष्णव और कबीर पंथ अपनी ऐतिहासिक भूमि को समाप्त कर जातिगत व्यवस्था में फंस गये थे और नीति विरूद्ध कार्य करने लगे थे । ऐसी स्थिति में यहां जबकि मराठा और अंग्रेजी शासन की भूल–भुलैया का कार्य चल रहा था और सामाजिक मान्यताएं मूल्यावान हो गई थी, जनता में न्याय पाने के लिए संघर्ष करने की हिम्मत न थी, तब घासीदास जी का जन्म हुआ था ।

छुआछूत की भावना उस समय प्रबल थी । ऐसी परिस्थिति में जन्म लेकर घासीदास जी ने उस युग की सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं दलितोद्धार की आवश्यकता की पूर्ति की । उनका उद्देश्य धार्मिक के

Scanned by CamScanner

साथ–साथ सामाजिक भी था । उनके उपदेश को लोग वेद वाक्य मानते थे ।[5]

घासीदास तपस्वी थे उन्होंने गिरौदपुरी के तपोभूमि एवं छाता पहाड़ में तपस्या किया । जिस प्रकार बोधि वृक्ष के नीचे बुद्धत्व को उपलब्ध होने के बाद गौतम बुद्ध ने चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया था । ठीक उसी प्रकार औंरा–धौंरा वृक्ष के नीचे परम ज्ञान को उपलब्ध होने के उपरांत घासीदास ने सात प्रमुख सिद्धांत दिये जिन्हें सतनाम दर्शन की नींव का पत्थर कहा जा सकता है । इनके सात सिद्धांतों में स्त्री के लिए भी एक खास सिद्धांत शामिल है । ये सिद्धांत है –

1. मूर्तिपूजा मत करो ।
2. मांस एवं मांस जैसी वस्तुओं का सेवन मत करो ।
3. शराब एवं अन्य नशीले पदार्थो का सेवन मत करो ।
4. *पराई स्त्री को माता जानो ।*
5. दोपहर के बाद खेतों में हल मत चलाओ ।
6. जाति भेद को मत मानों, मानव मानव एक समान है ।
7. निर्गुण निराकार सतनाम की एकमात्र उपासना करो ।

घासीदास जी की शिक्षाओं एवं नये स्वस्थ मानवतावादी दृष्टिकोण से उनके आस–पास विराट मानव समूह इकट्ठा हो गया और आगे चलकर 'सतनाम पंथ' की स्थापना हो गई । उनके पंथ को अनेक लेखकों ने 'सतनाम धर्म' की संज्ञा दी है ।[6] और यही से घासीदास जी 'गुरू घासीदास' हो गये तथा 'सतनाम' एक आंदोलन बन गया, जीवन मूल्यों में परिवर्तन का ।

गुरू घासीदास के युग में सुरा के बाद समाज में स्त्री सेवन चरम पर था। राजा और सामंत, दासी, रखैल, नगरवधू, देवदासी जैसी प्रथा के पोषक, संरक्षक और संवाहक थे । स्त्री को देह माना जाने लगा था । वह भोग की वस्तु मात्र बनकर रह गई थी । सामाजिक, धार्मिक प्रथा, परंपराएं, रूढ़ियां, आडम्बर सब स्त्री के सतीत्व के प्यासे थे । मठ मंदिर व्यभिचार के अड्डे बन गए थे । व्यवस्था सड़ी–गली, दुर्गन्धयुक्त थी । नारी को मुक्त कराना आवश्यक था । नारी का अस्तित्व खतरे में था, वह केवल 'मादा' रह गई थी ।

गुरू घासीदास ने इसका बीड़ा उठाया । उन्होंने किसी को न तो डांटा–फटकारा न ही गालियां दी । उन्होंने लोगों की दृष्टि ही बदल दी । यह केवल दृष्टिकोण का अंतर होता है । जब व्यक्ति अपनी मां–बहन या पिता–भाई के पास होता है तो उसके प्रति चित्त वासनारहित होता है, निर्मल व शांत होता है। लेकिन वही व्यक्ति जब अपने पति, प्रेमी, पत्नी, प्रेयसी आदि के साथ होता है तो काम–वासना समय–समय पर स्वतः ही जाग्रत होती रहती है ।

Scanned by CamScanner

गुरू घासीदास यह जानते थे । अतः उन्होंने जड़ को पकड़ा । पुरूष प्रधान समाज नारी को भोग की 'वस्तु' के रूप में देखता था जिससे स्त्री का वजूद 'देह' और 'यौन; तक सिमट कर रह गया था । अतः गुरू घासीदास जी ने जनसाधारण के अवचेतन मन में बसे 'स्त्री छवि' को रूपांतरित किया । गुरूघासीदास और उनके लाखों अनुयायी स्त्री को 'माता' की दृष्टि से देखने एवं 'माता' कहकर संबोधित करने लगे । इससे समाज में स्त्री ने 'भोग्या' और 'काम्या' की केंचुली उतार फेंका और उसकी मर्यादित छवि प्रतिष्ठित हुई । यह गुरू घासीदास जी का प्रथम और महत्वपूर्ण कार्य था कि पूरे मध्य भारत में उन्होंने स्त्री को पुरानी मांसल छवि के कारागार से मुक्त कराकर ममता के राजसिंहासन पर आसीन कराया । आज भी छत्तीसगढ़ में अनजान महिलाओं को भी उम्र अनुसार 'दाई' या 'दीदी' अथवा 'बहिनी' या 'नोनी' कहकर संवोधित किया जाता है, यह गुरू घासीदास और सतनाम पंथ की ही देन है ।

गुरू घासीदास ने नारी अपमान के विरूद्ध जबरदस्त आवाज उठायी । उन्होंने लोगों को संगठित होकर अपनी इज्जत की रक्षा करने एवं अपने चरित्र निर्माण का संदेश दिया । उन्होंने कहा कि नारी अपमान हिंसा है अतः इसका त्याग करना आवश्यक है । उन्होनें कहा कि पर नारी को माता, बेटी, बहन के समान समझना चाहिये । अगर मनुष्य नारी को माता के समान मान ले तो फिर उस पर अत्याचार हो ही नहीं सकता ।[7]

यहां पर परनारी या पराई स्त्री का मतलब है कि स्वयं की पत्नी (जिसके साथ दाम्पत्य संबंध है, वह भी स्त्री है पर उसके साथ दाम्पत्य संबंध भी निभाना है, मित्रतापूर्ण व्यवहार करना है), के अलावा संसार की समस्त नारी जाति के प्रति मातृतुल्य आदर एवं निर्वासनापूर्ण व्यवहार करना है । यहां सवाल अपनी–पराई का नहीं है । यहां संकेत है स्त्री का यथोचित सम्मान करते हुए आचरण करने के लिये।

गुरू घासीदास जी ने न केवल स्त्री को माता कहा है बल्कि उन्होंने तमाम दुधारू पशुओं को भी माता का स्थान दिया है जिनका दूध मानव समाज पीता है – जैसे गाय, भैंस आदि । इन मातृतुल्य पशुओं पर अत्याचार करने की भी वर्जना है ।[8]

गुरू घासीदास जी का चिंतन–मनन सामाजिक यथार्थ की धरातल पर कार्यान्वित होने वाला सत्य है, कोरा उपदेशात्मक कथ्य नहीं है । गुरू घासीदास जी के समय बहुविवाह प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, संती प्रथा, जौहर प्रथा, विधवा विवाह निषेध प्रथा, दहेज प्रथा, कन्या हत्या प्रथा, स्त्रियों को पुरूषों के समान काम की कम मजदूरी के नियम व बेगारी प्रथा, धार्मिक कार्यो में स्त्री की वर्जना की परंपरा, 'टोनही' के नाम पर स्त्रियों के प्रति अमानवीय व्यवहार की परंपरा, स्त्री को 'बांझ' कहकर

Scanned by CamScanner

प्रताड़ित करने की प्रथा, सुंदर स्त्रियों को बलपूर्वक अगवा कर लेने और उनका यौन शोषण करने की परंपरा, बालविवाह की प्रथा, पर्दा प्रथा, घूंघट प्रथा, रखैल प्रथा एवं अन्य अनेकों कुप्रथाएं व कुरीतियाँ समाज में प्रचलित थी । इन कुरीतियों और कुप्रथाओं के प्रति गुरू घासीदास जी के मन में तीव्र असहमति और अस्वीकृति की पीड़ा गुंजायमान हो रही थी । वह एक नया स्वरथ मानवतावादी समाज निर्मित करना चाहते थे जहां, हिन्दू–मुस्लिम, ब्राम्हण–शूद्र, स्त्री–पुरूष, अमीर–गरीब, गोरा–काला आदि विशेषणों से मुक्त होकर मानवता जीवित हो सके सबको समान रूप से जीने का अवसर उपलब्ध हो । उनका मौलिक चिंतन था कि जन्म देने वाली प्रकृति जब हमसे भेदभाव नहीं करती, हमारा शोषण नहीं करती तो फिर हम सचेतन मानव प्राणी ऐसा क्यों करें ? वे लोगों को समझाने के लिए निरंतर यात्रा करते रहे –

"घासीदास अपने समुदाय के अन्य लोगों के ही अनुसार निरक्षर थे, किन्तु अपने समुदाय की पीड़ा को समझकर बचपन से ही उनमें 'सामाजिक अस्वीकृति' के लक्षण विकसित हो गये थे और इसीलिये ये निरंतर यात्राएं (रावटियां) करते गये और जनता के दुःख से रूबरू होते गये ।"[9]

जनसाधारण की वास्तविक एवं व्यावहारिक स्थिति से अवगत होने के कारण उन्होंने समस्याओं का निदान भी वास्तविक धरातल पर ही खोजा । उनके कार्य और संदेश किसी जाति या धर्म विशेष के पक्ष–विपक्ष में नहीं थे, वह मानव मात्र का कल्याण चाहते थे, जगत–कल्याण चाहते थे ।

"गुरू घासीदास जिस असहमति से जुड़े हुए थे, वह किसी धर्म विशेष से सम्बद्ध नहीं थी । इसीलिये वे उपदेशक होने के साथ–साथ सुधारवादी भी थे । क्रांति के प्रति उनके मन में एक तीव्र ज्वाला थी । वे स्वप्न दृष्टा थे और भारत के भाग्य को लेकर हमेशा चिंतित रहते थे । उनमें धीरे–धीरे संघर्ष के जो विचार प्रस्फुटित हुए, वे विरोधों की द्वन्द्वात्मकता के कारण 'सतनाम' में तब्दील हो गये ।"[10] और इसी सतनाम दर्शन में स्त्री को 'आमिन' या माता कहा गया ।

गुरू घासीदास जी ने हाशिये पर मरणासन्न पड़ी स्त्री को उठाकर पुरूष के समकक्ष स्थापित किया । धार्मिक कार्यो में पुरूष (पति) के साथ उसकी स्त्री (पत्नी) की उपस्थिति अनिवार्य कर दी । जीवन के हर क्षेत्र में पुरूष के समान अवसर उन्हें प्रदान किया गया ।[11] इसीलिये आज भी सतनामी महिलायें घूंघट, पर्दा या चारदीवारी में कहीं कैद नजर नहीं आती । वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहीं हैं यह प्रत्यक्ष प्रमाण है । तुलनात्मक रूप से सतनामी समाज की स्त्रियां निर्णय लेने के लिए अधिक स्वतंत्र है । सतनामी स्त्रियां किसी के भी जुल्म ज्यादातियों को बर्दाश्त नहीं करतीं, बल्कि ललकारतीं है

Scanned by CamScanner

और डटकर मुकाबला करती हैं, बिना किसी डर व भय के । यह गुरू घासीदास जी की शिक्षाओं एवं कार्यो का ही प्रभाव है ।

जिन स्त्रियों को संतान नहीं है या बेटियां है पर बेटे नहीं है उन्हें समाज में अपमानित किया जाता था, जिसे गुरूघासीदास जी ने सख्ती से बंद कराया । पंथी गीतों की पंक्तियों में भी स्त्री को प्रताड़ना का निषेध है –?

"झन कइहा नारी ल कुलछनी जी
झन कइहा नारी ल कुलछनी ग
नारी बिन जग नई चलनी रे
झन कइहा नारी ल कुलछनी
नौ महिना ले ओद्र में राखके, मानुस तन सिरजाथे
लइका के नींदे सुते दाई हर, लइका के नींदे जागथे
आंसू ल पी पी के गोरस पियाथे, बेटा के मंगलकरनी
झन कइहा नारी ल कुलछनी ।"

– पंथी गीत

गुरू घासीदास जी के इस निषेध से समाज में स्त्री प्रताड़ना की घटनाओं में बहुत कमी आई ।

जो पुरूष अपने स्वार्थ में लिप्त थे और स्त्री की पीड़ा को नहीं देखते थे, उन्हें बाबा ने चेताया – "तोर पीरा ओतकेच आय जतका एकर अऊ मोर पीरा आय" (अर्थात् तुम्हारी पीड़ा उतनी ही है जितनी कि मेरी और अन्य लोगों की । सबको समान रूप से पीड़ा होती है ।) अतः हे मानव समाज स्त्री को पीड़ा मत दो बल्कि उसकी पीड़ा को महसूस करो ।

ऐसा कहने वाले वे शायद पहले संत है, जिन्होंने स्त्री की कहीं भी निंदा नहीं की, बल्कि स्त्री के प्रति सहानुभूति और समानुभूति रखा । गुरू घासीदास की शिक्षा को जनसाधारण ने स्वीकार किया और इससे समाज में व्यापक परिवर्तन हुए।

गुरू घासीदास जी ने समाज को समझाया कि स्त्री बच्चा पैदा करने, सेवा करने या उपभोग की वस्तु मात्र नहीं है । वह मनुष्य है उसे मान–सम्मान के साथ जीने का अधिकार है ।[12] इसी का प्रभाव है कि उनके अनुयायियों में घूंघट प्रथा, पर्दा प्रथा का चलन नहीं है बल्कि स्त्री और पुरूष घर, खेत, खलिहान व दफ्तर सभी जगह समानता के भाव से कार्य में संलग्न है ।

गुरू घासीदास की 'स्त्री पीड़ा' विस्तृत होती हुई गाय, भैंस तक चली गई। वे कहते हैं "मुरही गाय भइंस के दूध झन पीबे" अर्थात जिसका बछड़ा मर गया हो ऐसी गाय–भैंस का दूध मत पीना वह (माता) अपने बछड़े (संतान) के वियोग में स्वयं दुःखी होती है ।

Scanned by CamScanner

दहेज के विरूद्ध गुरू घासीदास जी ने 'सुक्ख पटाने' की नई परंपरा निर्मित की । उन्होंने कहा 'कन्या' सबकी बेटी है, मिल जुलकर उसकी शादी करो । दहेज लेना देना वर्जित है । वर पक्ष को सवा रूपये या एक सौ पांच रूपये (जैसा कन्या पक्ष सक्षम हो) देकर सामाजिक रीति–रिवाज से विवाह संपन्न कराया जा सकता है । इस सुक्ख राशि (शुभ राशि) के प्रचलन का प्रभाव यहां तक पड़ा कि उनके अनुयायियों में आज भी टीका, तिलक, दान–दहेज जैसा शब्द अपरिचित ही रह गया है । दहेज उनके इस समाज में आज भी व्यावहारिक रूप में भी कहीं नहीं मांगा जाता है ।

"कुंवारी कन्या सब कर बेटी
जुरमिल लगन कराव कुमेटी
सुक्ख पटाई रिती चलाहू
दहेज दानव मार भगाहू ।"(13)

गुरू घासीदास जी के पंथ में स्त्री सृष्टि का आधार है, वह परमात्मा की अमूल्य कृति है, पुरूष के साथ कदम से कदम मिलाकर चलती है, पर कभी थकती नहीं क्योंकि वह अबला नहीं सबला है –

"नारि शील निधि सृष्टि अधारा । कुशल कृति उनकी कृतिकारा ।।
कदम कदम जोरि चलि नारी । पुरूष पंथ पर थकि नहिं हारी ।"(14)

गुरू घासीदास जी के काल में सती प्रथा का प्रचलन बहुत था, कहीं कहीं पर जौहर प्रथा भी प्रचलित थी । पति की चिता पर पत्नी को जिंदा जला दिया जाता था । गुरू घासीदास जी ने लोगों को समझाया कि जो नारी शोषित, उत्पीड़ित, दुःखी व शोकाकुल है उसके कष्टों को दूर करने के बजाय आप उनको जबर्दस्ती जिंदा जला रहे हैं, यह ठीक नहीं है । उन्हें जीने दो । उन्होंने एकजुट होकर इसके विरूद्ध संघर्ष किया ।(15)

भारतीय पुनर्जागरण के इतिहास में जब राजा राममोहन राय का अभ्युदय नहीं हुआ था उस काल में गुरू घासीदास और उनके अनुयायियों ने छत्तीसगढ़ से इस गंदी प्रथा को उखाड़ फेंका था ।

राजा राममोहन राय सती प्रथा के विरोध में तब जागे जब स्वयं उनके बड़े भाई की मृत्यु हो गई और उनकी भाभी को चिता में जिंदा जलाया गया । आग से बचने के लिये उनकी भाभी व्याकुल होकर वहां से निकल भागना चाहती थी पर रूढ़िवादी रिश्तेदारों एवं पंडितों ने उसे बांस से जबर्दस्ती वापस आग में ढकेल दिया। वह बड़ी निर्मम हत्या थी जिसे देखकर राजा राममोहन राय ने इस रूढ़ि को मिटाने का प्रण किया ।(16)

Scanned by CamScanner

गुरू घासीदास जी ने केवल करूणावश ही इस कार्य को आंदोलन का रूप दिया था और वे सफल भी रहे । "उक्त प्रथा की जानकारी होने पर ब्रिटिश रेसीडेन्ट ने नागपुर के राजा से यह आग्रह किया कि इस प्रथा के उन्मूलन हेतु वे आवश्यक कार्यवाही करें । राजा ने इस प्रथा के उन्मूलन हेतु राज्य में सितम्बर 1931 ई. में एक आदेश प्रसारित किया ।"(17) इस तरह गुरू घासीदास और उनके अनुयायियों ने एक भयानक रूढ़ि को समाज से मिटाकर स्त्री को बचाने का कार्य किया । गुरू घासीदास के उपदेशों को मानकर उनके अनुयायी स्त्री–पुरूषों सभी ने बेगारी काम करना बंद कर दिया था इस तरह स्त्रियों का आर्थिक शोषण स्वतः बंद हो गया ।

सतनाम पंथ में स्त्रियों को हर जगह समान अधिकार है । बिना विवाह के कुंवारे व्यक्ति को नाम दान कंठी भी नहीं बांधा जाता है । प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान में पति के साथ पत्नी अनिवार्य है । सतनाम दर्शन स्त्री–पुरूष को पूरक मानता है क्योंकि दोनों से ही सृष्टि संचालित हो रही है –

"दोई मिलके दुनिया बनाया है
दोनों में समाया है
एक नारी एक पुरूष कहाया है
दोनों में समाया है ।"

– पंथी चौका गीत

अर्थात् सत् स्त्री व पुरूष दोनों में समान रूप से उपस्थित है अतः भेदभाव कैसा ।

गुरू घासीदास ने नारी को जो महत्ता दी, वह किसी धर्म ने नहीं दी है । उन्होंने स्त्री जागरण का संदेश इन शब्दों में देकर स्त्री को पुनर्जीवित कर दिया है – "अपन ल हीनहा अऊ कमजोर झन मानहु" (अर्थात् स्वयं को हीन एवं कमजोर कभी मत मानो) । उनके इस संदेश से समूचे स्त्री जाति में आत्मबल एवं आत्म सम्मान का संचार हुआ और स्त्री की चेतना मूलाधार से सहस्रार की ऊंचाई तक पहुंचने में सफल रही ।

गुरू घासीदास के सतनाम पंथ के कार्य में सफूरा माता, सुभद्रा माता, प्रतापपुरहीन माता आदि नारियों का भी उतना ही योगदान है जितना गुरू घासीदास जी गुरू अमर दास जी, गुरू बालकदास जी एवं अन्य गुरूओं का । आज भी सतनामी समाज के किसी भी अन्य राजनेताओं की तुलना में ममतामयी मिनीमाता की स्वीकार्यता अधिक ही है । गुरू घासीदास जी के सतनाम पंथ में स्त्री को समान अवसर मिला है । आज भी यदि पंथी गायकों की सूची देखी जाये तो जितने प्रसिद्ध

Scanned by CamScanner

गायक हैं उतनी ही प्रसिद्ध गायिकायें भी हैं, जो समान योगदान दे रहीं हैं ।

सती प्रथा को बंद कराने के बाद गुरू घासीदास जी ने विधवा स्त्री के पुनर्विवाह का मार्ग प्रशस्त किया और चूड़ी पहनाने की नई परंपरा बनायी । इस परंपरा के अनुसार किसी विधवा स्त्री को कोई पुरूष पत्नी बनाकर ले जाना चाहता है तो कोई खर्च करना नहीं पड़ता, वह विधवा स्त्री के लिये चूड़ी लेकर जाता या भंगवाता है, यही प्रस्ताव है, शगुन है और विवाह है । यदि स्त्री उस पुरूष के साथ दाम्पत्य स्वीकार करती है तो चूड़ी पहनकर चली जाती है । यह पुनर्विवाह है । गुरू घासीदास जी ने कहा था सती प्रथा बंद करो, विधवा स्त्री से पुनर्विवाह करके, चूड़ी पहनाकर उसे दुबारा जीने का अवसर दो ।[18] इस शिक्षा का प्रभाव ही कहा जायेगा कि उनके अनुयायी समाज में उन विधवा स्त्रियों की संख्या नगण्य है जो पुनर्विवाह कर घर न बसा लिये हो । लगभग सभी विधवाओं एवं परित्यक्ताओं का दुबारा घर बस जाता है ।

गुरू घासीदास जी ने अपने काल में अपने अनुयायियों को समझाया था कि 'टोनही– के नाम पर महिलाओं को प्रताड़ित न किया जाये और इसका सार्थक प्रभाव पड़ा है । गुरू घासीदास ने एक जीवित पत्नी के रहते दूसरी पत्नी रखने को वर्जित किया था जिससे बहुपत्नी प्रथा में भारी कमी आई है, हालांकि इसके कुछ अपवाद भी है ।

गुरू घासीदास की शिक्षाओं के कारण रखैल, वैश्यावृत्ति, कन्या हत्या, एवं अनैतिक यौन शोषण जैसी घटनाएं छत्तीसगढ़ से लगभग बाहर ही हो गई थी तथा उनके अनुयायियों में तो शून्य ही हो गई । गुरू घासीदास जी ने बाल विवाह का भी विरोध किया । साथ ही उन्होंने यह व्यवस्था दी कि कोई भी पुरूष बिना किसी उचित कारण, समाज की सहमति के बिना, मनमाने ढंग से अपनी पत्नी को घर से निकाल नहीं सकता, न ही उसे प्रताड़ित करने का अधिकार उसके पास है । पति को पत्नी के समान व सम्मानपूर्वक बर्ताव करना होगा । स्त्रियों को टोनही के नाम पर प्रताड़ित करने व उसे मृत्युदण्ड देने जैसी भयानक प्रथा को उन्होंने प्रतिबंधित किया ।[19]

गुरू घासीदास जी का एक संदेश है – "एक घूवा मारे तेनो तोर बराबर आय" (अर्थात् एक गर्भस्थ शिशु को मारने में भी उतनी ही हिंसा है जितनी किसी (तुम्हारे जैसे) व्यक्ति को मारने में है । गर्भस्थ शिशु से भी प्रेम करो ताकि वह सात्विक आचरण वाला उत्पन्न हो । गर्भस्थ शिशु को कष्ट देना अथवा मारना भी हिंसा ही है ।[20] यह हिंसा भी अनुचित एवं त्याज्य है । गुरू जी के इस संदेश का समाज पर इतना व्यापक प्रभाव है कि राजस्थान, हरियाणा, पंजाब जैसे प्रांतों की तुलना में यहां कन्या हत्या एवं कन्या भ्रूण हत्या छत्तीसगढ़ की संस्कृति में नहीं ही

Scanned by CamScanner

है ।

इनके अलावा गुरू घासीदास जी ने नरबलि एवं पशुबलि प्रथा को बंद कराया । देवी–देवता एवं यज्ञ अनुष्ठान के नाम पर गौमेध यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ, नरमेध यज्ञ होते थे । बकरा, मुर्गा, भैंसा आदि की ही नहीं बल्कि मनुष्य की भी बलि दी जाती थी।[21] नरबलि से जनता भयभीत थी । पहली बार इन डरे, सहमे, भयभीत, निर्धन लोगों को गुरू घासीदास ने जगाया और महान क्रांति घटित हो गई । गुरू घासीदास के साथ जनसाधारण ने विद्रोह का शंखनाद कर दिया । यह आवाज ब्रिटिश सरकार तक पहुंच गई । ब्रिटिश सरकार ने कर्नल कैम्पबेल को इस प्रथा के उन्मूलन हेतु प्रतिनिधि बनाकर ब्रिटिश फौज के साथ तैनात किया । इस तरह गुरू घासीदास और उनके अनुयायियों की मदद से नरबलि की अमानवीय कुप्रथा समाप्त हुई ।[22] गुरू घासीदास की शिक्षाओं से स्त्री माया रूप में निंदित नहीं हुई बल्कि स्वस्थ गृहस्थ धर्म का उदय हुआ, घरेलू हिंसा, पत्नी के चरित्र पर शक करके उसे सताने की प्रवृत्ति खत्म हो गई ।

गुरू घासीदास न केवल एक आध्यात्मिक व्यक्ति थे बल्कि वे महान चिंतक और समाज सुधारक भी थे । परंतु कितने दुःख व शर्म की बात है कि भारतीय इतिहासकारों ने गुरू घासीदास जैसे महानतम व्यक्तित्व (जो कि बुद्ध, महावीर, जीसस व शिव के कद काठी का है) की घोर उपेक्षा की, यहां तक कि इतिहास में जिक्र तक नहीं किया । आखिर क्यों ? उनका सतनाम आंदोलन जातिगत नहीं था "सर्वजन हिताय" था ।

इस संबंध में हीरालाल शुक्ल लिखते हैं – 'घासीदास का आध्यात्मिक आंदोलन केवल दलित वर्ग तक सीमित नहीं था, अपितु उससे उच्च वर्ग की जातियां भी जुड़ गई थी । इन महत्वपूर्ण प्रारंभिक सफलताओं के बाद घासीदास ने एक सच्चे समाज सुधारक की भांति अन्य सामाजिक बुराईयों को दूर करने का प्रयास किया, जिनमें टोनही के नाम से औरतों का वध, नरबलि, बहुविवाह तथा जीवहत्या प्रमुख थी। ..... संक्षेप में उन्होंने चर–अचर चेतन जगत की रक्षा का बीड़ा उठाया था और इस प्रकार वे महान् भारतीय चिंतकों की परंपरा में आ गए ।[23]

इतने बड़े चिंतक, संत, समाज–सुधारक को इतिहास के पन्नों से गायब कर देना महज संयोग नहीं हो सकता, यह विकृत सोच की षड़यंत्रपूर्वक की गई सुनियोजित घटना है । लानत है ऐसी विकृत मानसिकता वाले तथाकथित विद्वानों पर और धन्य है ये धरती जो ऐसे नालायकों का बोझ भी ढो लेती है ।

गुरू घासीदास का आंदोलन इतना विराट था कि डॉ. हीरालाल शुक्ल लिखते हैं – "हमें स्वीकार करना होगा कि गुरू घासीदास भारतीय उपमहाद्वीप में प्रजातांत्रिक क्रांति के अग्रदूत थे ।"[24]

Scanned by CamScanner

सुश्री पद्मा डड़सेना के अनुसार – "गुरू घासीदास जी के मन में नारी जाति के लिए विशेष सम्मान की भावना थी । वे छत्तीसगढ़ में नारी जाति के प्रथम उद्धारक थे । पूरी स्वाधीनता और कर्मठता का अधिकार स्त्रियों को गुरू घासीदास ने ही दिलाया था । विधवा स्त्रियों का पुनर्विवाह, धार्मिक कार्यों में पुरूषों के बराबर हिस्सा लेने का अधिकार तथा एक ही स्त्री से विवाह संबंधी हक के लिए गुरू घासीदास ने सतत् संघर्ष किया और नारी जाति के सामाजिक गौरव को पुनः प्रतिष्ठित किया ।"(25)

यह संघर्ष केवल छत्तीसगढ़ तक सीमित नहीं था, बल्कि पूरे भारतीय उपमहाद्वीप तक फैल गया था । गुरू घासीदास की प्रेरणा का विस्तार हमें ज्योतिराव फूले, डॉ. अम्बेडकर, महात्मा गांधी, विवेकानंद, राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एवं अन्य सैकड़ों समाज सुधारकों में दिखलाई देता है ।

गुरू घासीदास के सफल व सार्थक योगदान को देखते हुए सत्यर्षि वेदानंद दिव्य ने गुरू घासीदास जी को, नारी शक्ति को जिंदा करने वाला पहला महापुरूष माना है तथा 'विश्व इतिहास में नारी जाति के अंधकारमय जीवन में सूर्य की पहली किरण' की संज्ञा से सम्बोधित किया है ।(26)

गुरू घासीदास के संघर्ष से पहले स्त्री का अस्तित्व नहीं था, उसकी चेतना सो गई थी, आत्मा खो गई थी, वह कहां थी शायद उसे भी पता नहीं था । इस स्त्री अस्तित्व की खोज करते हुए इस सदी के महान विचारक ओशो कहते हैं – "नारी और क्रांति, इस संबंध में बोलने का सोचता हूं, तो पहले यही ख्याल आता है कि नारी कहां है ? नारी का कोई अस्तित्व ही नहीं है । मां का अस्तित्व है, बहन का अस्तित्व है, बेटी का अस्तित्व है, पत्नी का अस्तित्व है, नारी का कोई भी अस्तित्व नहीं है । नारी जैसा कोई व्यक्तित्व ही नहीं है । नारी की अपनी कोई अलग पहचान नहीं है । नारी का अस्तित्व उतना ही है जिस मात्रा में वह पुरूष से संबंधित होती है । पुरूष का संबंध ही उसका अस्तित्व है । उसकी अपनी कोई आत्मा नहीं है।"(27)

गुरू घासीदास जी ने अपने जीवनपर्यन्त के संघर्ष में यही तो किया है– स्त्री का अस्तित्व, उसकी स्वतंत्र पहचान, उसकी अपनी आत्मा उसे उसके हाथों में दे दी है । अब स्त्री का कर्तव्य है कि वह अपनी आत्मा बचाए रखे, आत्मवान बने और सभी स्त्रियों को आत्मवान बनने में सहयोग करे । तभी गुरू घासीदास जी का योगदान और स्त्री विमर्श का श्रम सार्थक हो सकेगा ।

**संदर्भ–सूची :–**

1. स्त्री विमर्श (पुरूष रचनाधर्मिता के विशेष संदर्भ में) – डॉ. विनय कुमार पाठक,

Scanned by CamScanner

भावना प्रकाशन दिल्ली, 2009, ISBN 81–7667–164–9 पृष्ठ क्र. 26–27
2. वही – पृष्ठ 27
3. महादेवी प्रतिनिधि कविताएं – संकलन–संपादन – डॉ. रामजी पाण्डेय, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, 2011, ISBN 978–81–263–1616–8 पृष्ठ क्र. 142
4. सतनामी और सतनाम आंदोलन – डॉ. शंकर लाल टोडर, सत्यनाम सेवा संघ सेरीखेड़ी, (मंदिर हसौद) रायपुर, 2000, पृष्ठ 77
5. छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन (भाग–2) मदनलाल गुप्ता, पृष्ठ 391
6. Guru Ghadidas and his Satnam Philosophy - Dr. H.L. Shukla, B.R. Publishing Corporation, Delhi 2004, Page -53.
7. सतनामी और सतनाम आंदोलन – डॉ. शंकर लाल टोडर, सत्यनाम सेवा संघ सेरी खेड़ी (मंदिर हसौद), रायपुर, 2000 पृष्ठ – 213
8. वही – पृष्ठ 213
9. रचना (द्वैमासिक) मार्च–जून 1997 (संयुक्तांक), म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल में संकलित डॉ. हीरालाल शुक्ल का लेख 'गुरू घासीदास तथा महात्मा गांधी का सामाजिक यथार्थ (सतनाम से सत्याग्रह तक)', पृष्ठ – 34
10. वही पृष्ठ – 34
11. सतनामी और सतनाम आंदोलन – डॉ. शंकर लाल टोडर, सत्यनाम सेवा संघ सेरी खेड़ी (मंदिर हसौद) रायपुर 2000, पृष्ठ – 195
12. गुरू घासीदास जीवन चरित्र, राजमहंत नम्मू राम मनहर, मानव उत्थान साहित्य संस्थान भिलाई, 2008 पृष्ठ 135
13. गुरू घासीग्रंथ रामायण (सतनाम पोथी सात खण्ड), सुकुलदास घृतलहरे नवापारा (राजिम), रायपुर 1995, छठवां 'म' खण्ड दोहा 11 के पूर्व चौपाई
14. श्री प्रभात सागर – मंगत रवीन्द्र, मल्होत्रा मल्टीमीडिया कोटमीसोनार (अकलतरा), 2005, सप्तम प्रभात, नारी महिमा वर्णन, पृष्ठ 717
15. छत्तीसगढ़ की अस्मिता (पत्रिका) – संपादक – डॉ. केशरी लाल वर्मा छ.ग. अस्मिता प्रतिष्ठान रायपुर, जनवरी 2002, पृष्ठ – 223
16. रचना (द्विमासिक), मई–जून 2001, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल में संकलित, शंभुनाथ का लेख 'स्त्री विमर्श की मुश्किलें' पृष्ठ 31
17. छत्तीसगढ़ का इतिहास (1818–1854) – ठाकुर भगवान सिंह वर्मा, सेन्ट्रल बुक हाऊस रायपुर, 1986, पृष्ठ 114?
18. अद्भुत दिव्य ज्ञान के ज्योति पुरूष संत गुरू घासीदास जी – डॉ. अमर मोहन

Scanned by CamScanner

बारले, कलेंदी बारले, पन्दर (पाटन) दुर्ग, पृष्ठ 114
19. सत्यालोक (पत्रिका) – संपादक – डॉ. अंतराम बंजारे, अखिल भारतीय सतनामी कल्याण समिति छ.ग.शाखा गिरौदपुरी (रायपुर) मार्च–अप्रैल–2001, पृष्ठ–4
20. परमपूज्य गुरूघासीदास जी सत्ज्ञान – डॉ. भूषणलाल जांगड़े, पृष्ठ–32
21. छत्तीसगढ़ का इतिहास (1818–1854) – ठाकुर भगवान सिंह वर्मा, सेन्ट्रल बुक हाऊस रायपुर 1986, पृष्ठ 113
22. वही, पृष्ठ 114
23. गुरू घासीदास : संघर्ष, समन्वय और सिद्धांत – डॉ. हीरालाल शुक्ल, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, 1995, पृष्ठ 151–152
24. वही, पृष्ठ – 134
25. सत्यालोक (पत्रिका) – संपादक – डी.एल. दिव्यकार, अ.भा.स.क. समिति, छ. ग.शाखा गिरौदपुरी, मार्च–अप्रैल 2001, पृष्ठ 151–152
26. सतनाम संदेश (सामाजिक मासिक पत्रिका) – प्रबंध संपादक – डी.एल. दिव्यकार, प्रगतिशील छ.ग.सतनामी समाज रायपुर, अगस्त 2014 पृष्ठ 12 एवं 15

——00——

Scanned by CamScanner